

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिपि संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५२२० (२२९)

ग्रंथ नाम पद बाड.

व श्लोक.

विषय मराठी काव्य.

प्रराठी
क्र. नं. २३

निरंजन - प्रो.

काव्य

५९५/५

२२०



सांग ॥ रा मा ग ती ते वं सु ॥ १५ ॥ मा
 रक्षी रा ग ती ते ज सु धा म ही ना ॥ १६ ॥
 ध्या ने लू द्या सर्व ला हो पळा ला ॥
 रक्षी दे वा इं दु ला हो पळा ला ॥ १७ ॥
 श्री ब्री दं प्रा पु ला दी न ना था ॥ पा वे
 प्रा ह्ना ही न ना था ॥ १८ ॥
 प्रा र्थि ते स व ना था ॥ बो
 लि ला स स के त यं ला ॥ १९ ॥
 क व र्ष भा रि त ना था ॥ व स रा
 ध प द हो त्र य ला को ॥ २० ॥ स वे णा
 र्थि तां दे व दे तो व रा सी ॥ न दे स्वा च्य
 तु र्थी स ता रा व रा सी ॥ न भं शु क
 वो थी स ज्यो पा म रा सी ॥ दि से चं द



(५२)

गणेश

सा बाघ दे पाप राशी ॥ ११ ॥ अर्चु
नी गणपती सुमनाने ॥ ध्यातिले
गणपती सुमनाने ॥ प्रार्थितो ग
णपती समनुशा ॥ देतसे गणप
ती समनुशा ॥ देवता सकळ
सत्त्वराच ॥ लिमगत्तरा ॥
स्वर्ग हा गत ॥ राणा ॥ पाहतो
सुख सुधार ॥ १॥ मंगसाग
रिंजसे उडपासे ॥ पाहती बुधत
से उडपातै ॥ सांगती सरसत्यास
उपाया ॥ जो हरी अमृत तेज अपा
या ॥ २२ ॥ तुं अहे स गुरुचा अपर
धी ॥ जावनी सरण त्या ॥

(२५)

गणेश

प्रार्थि मंत्रं त्वं त्वं चि आर्च्यं
तो हरी लसके लै तव आधी ॥२३॥
एकाक्षरी मंत्र अपूर्व देव ॥ सांगो
न इंद्रादि अपूर्व देव ॥ जातां शरी
ध्यात अपूर्व देव ॥ जो मारितो सर्व
हि पूर्व देव ॥ राक्षसाती
रवि लोचन ॥ वेलादीवरी ॥
किंब ग्रामतिथि ॥ तपकरी सद्ग
किमुकीवरी ॥ ताळ तमाळ
शाळ बेकुळी केळी अडोळी वनी ॥
केकोकं कपिकी शुकादि माती म
त्सादिके जीवनी ॥२५॥ जिंको नि
तां मानस नेत्र पातें ॥ साको न सा
धी विध नत्र पातें ॥

गणेश

(3)
 नौ पाँज सास र्यजगत्रे पाले ॥ पा
 हेत साइं दुजगत्रे पाले ॥ २६ ॥
 हुन ते ज ब हुगण राजा ॥ साध्व
 स पावे तो द्विज राजा ॥ २७ ॥ तिस
 सांड विदेव क पा हे मूर्ति स सुंद
 र तो विधु पात्रे ॥ कुंडल मंडि
 त दंग ड अ ट हि थंड प डो
 शि रिं द ने ॥ २८ ॥ डित थुंड व के
 अप ति पुंड वि खंड र द ने ॥ २९ ॥
 दु वि भांडित ग लुं ठित गुं ठित व डि
 त थंडित जो वर द ने ॥ पुंड शुभा शु
 कुटी निपुटी नि कटी कु मु टी कि म टी
 वर द ने ॥ ३० ॥ देव पा दा व र
 विं दा श शी सुं द रा ॥ घा ल सा षां ग
 जा डि क रा अ द रा ॥ प्रा र्थ ने नि क
 धर की ३

रीसाहुनियां दरा ॥ माग तो तो वरा
देव लो बो दरा ॥ २१ ॥ नमो विष्णु हर्ता
द्वितीयो निजा स्वप्रदेशा ॥ नमो धर्म
कामार्थ मोक्ष प्रदेशा ॥ नमो विश्वसं
हार कर्तार पादा ॥ नमो रक्षदेवामं
मलाद्वार पादा ॥ पाहुनियां स
नमो लो एव ॥ स्तुति ला ॥ दे
व रूपे एक व ॥ से क ये क व ॥
लक्ष्मण शची ॥ च न र द र नी तु ल
मला जो अन वि वि घ ड ॥ स्व त्यां घ ड
तु ला म ला ॥ ॥ म न ते यु क्त जो पु त्र
मला त थं श्र वि ष पा ॥ स वी शि धि वि ष
ना श वं घ ह त्रि वि ष पा ॥ ३२ ॥ ॥

नभवकुलचतुर्थीत्यागुनिवाउवेवा
 जनननिम्मभाळीदेखतीकाठवेवा
 अमतजहविषेहोअग्निजायास्वधा
 मा॥वडुनिवरअसाश्रीठुंठिगेळा
 स्वधामा॥३॥पासायातेबाधनि
 स्थापितिवरआवेहोतेतेथ
 मुनिकरवरसधेजीपावति
 पापंप्रतिपातनिगेवेप्राजुनक
 रितिप्रतिपातपातेनिधिअ
 मिधानाठेउनिचचंद्र॥नेमुनिस्व
 वडुनिनमुनिदेवादेवरिकपाव
 सकळहिवावितीधंस्तापुनावय
 हावा॥मनधतभगवानापावल
 स्वगृहावा॥३५॥७॥॥॥॥

श्री गुरु गजानन
 भजनने देक्षेण केदारा ॥ ध्रु ॥ दे
 त्यवीघातनि ॥ जजनतारकदाय
 क अभयरा ॥ १ ॥ नागविभुशाय
 घोटकवाहनखड्गत्रिषु ॥ २ ॥
 रा ॥ २ ॥ रत्ना ॥ गुरहरत्ना
 नीरीवरत्न ॥ कुमरा ॥ ३ ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः श्रीगुरुभ्यो न
॥ मः गणाय नमः सितसुषे
॥ अहो धन्यकासि चित्तये
॥ गनसहो ॥ १ ॥ विरंचि च चूना अ
लोत अहो धन्यकासि चित्तये
॥ २ ॥ कैवला चित्तये ॥ अ०
त्रैलोक्ये ॥ ३ ॥ कैवला
॥ देवो देवतास्य कासि
॥ चातयासि चित्तये ॥ ४ ॥ कायक
॥ रावै कलास ॥ अहो धन्यकासि
॥ विषावाट्टदास ॥ ५ ॥ कायकरा
॥ विसमाधि ॥ अहो धन्यकासि च
॥ -



Joint project of the
Chavvan Prashant Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ वीयोगत्वाधि ॥ ६ ॥ नत्नगहाच
॥ इकपाकि अहाधन्यकासिच ॥
॥ वियोगजाकि ॥ ७ ॥ नराचतिस
॥ र्पनुषपा ॥ अहाधन्यकासिच
॥ वियोगदशा ॥ ८ ॥ सर्वोसिवदसि
॥ रांकरा ॥ ३ ॥ कासिसीपा
॥ रसवरा ॥ १ ॥ तेअवदवन
॥ अहाधन्य ॥ २ ॥ पतेकासिच
॥ १० ॥ माहासिचान ॥ १० ॥ स
॥ दातेत्रीशुळावरि ॥ अहाधन्य
॥ कासितेअविमुक्तपुरि ॥ ११ ॥ धू
॥ तपापानिअकीर्ण ॥ अहाध
॥ न्यंकासिचिअसिवरुष्या ॥ १२ ॥



Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai
Total project cost: Rs. 1,00,000/-

(6)
 धन्यते मनकणीक ॥ अहाध
 ॥ न्यकासिते ज्ञानवापिका ॥ २
 ॥ धन्येति नक्रपुष्पणि ॥ अहाधन्य
 ॥ अईतर्पि भवेतरणि ॥ ३ ॥ धं
 ॥ न्यते अहं नो अहाधन्य का
 ॥ सुखाविश ॥ ४ ॥ धन्य
 ॥ संकष्टमं ॥ गरी ॥ अहाध
 ॥ न्यल्लिले ॥ राजराजेश्वरी ॥ ५
 ॥ धन्यं बोनिणि चो सष्ट ॥ अहा
 ॥ धन्यं वामदेव वसिष्ठ ॥ ६ ॥
 ॥ विनायक हो साक्षिचा ॥ अहा
 ॥ धन्यकासिराजधुदुराजह

(6A)

॥ धर्मकाळेश्वरि कुप ॥ अहा ॥

॥ ज्ञानवैराग्यमुक्तमंडव ॥ ॥ ध

॥ न्यहा विरेश्वर ॥ अहा धन्य कासि

॥ लिंगकेदार ॥ ॥ कासिराज

॥ हों वदना ॥ ॥ धन्य कासिन्य

॥ रेमजना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः श्री



होयसुखाचा धारामपटताजयरा
 मअयम॥प्रहरीवटपंविद्व॥
 गृहेतेहेवटगाव॥१॥५॥जेथंम
 वायकचधर्म॥तेथप्रकटीश
 जयरा॥३॥४॥सहजवोळ
 अनंतपुत्र
 पाहसकी॥नयनापुटेदि
 ॥३॥३॥गुड॥
 सारवभुंउमकहा॥मुगुटि
 कुडकुडळिप्रकार॥२५
 पाशाकुशात्रयकर॥कटि
 रत्नमुक्तहासोकटिनाज
 स्वतांकर॥शोनसर्वीगिपं



Digitized by eGangotri
 of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.
 www.yashwantrao.chavan.org

७८
७८०॥२॥

चरणि किंकिणि
रत्नमुकुटाशलेयामचंगना
उमुह उमुह

मुपुरा उदारा अगम्यकृतिसारा

॥१॥ अवेदेवस्य गगनिगुणेशा

स्वा नंदमुवे हिं दिकंतवन

वैकल्येना॥२॥ सर्वोत

योमिचाकुरु काये जाणेअ

नि॥३॥ औच्यावामध्यं तवशक्ति

मोटी॥ हरिलेखसुरकोटी॥४॥ जमिनी

रंजनी तुझी चसला धातांडगणनाथा

॥५॥ विनायकदेवानेणे कैसि तंवसेव

जनिव मिलुअद्यवाजिवाच्याजिवा॥६॥ का

मकोथनेमजलापिठिलेअभिमानंतरि

(8)

निदामसहस्रमंजुलाच्छिन्नोन्निरंतर
मुचिमासेनिजमाहेरविश्रान्तिघरा॥३॥
गणेशदासाचाहतासत्यविवाचो
पागफेजदेतुहिसाधोरघोरचा॥४॥

गणेशदासाचाहतासत्यविवाचो
विद्याविमोक्षोन्नीतविद्याविमोक्षोन्नीत
गणेशदासाचाहतासत्यविवाचो
सुजाणतसि॥१॥ अंतरीचावे
होनसावागदरुसोसवातोचिसु
रव॥२॥ संसारमोटाकाकरावसाम
र्थहसिअवडतंदेवराया॥३॥ नि
निरंजनिअरुजपाराका॥४॥ सिद्धि
नायकावितामणि॥५॥

(8A)

प्रो

द्वसुभीचायेकला॥पोराठापी
विभागला॥लाहानथोरभावीया
ला॥कोटिकोटिहीजहया॥१॥विद्याव
द्विचाविकास॥गणेशनामाविम्वर
अ॥दुस्तिकअकराचारास॥मुखमाय
बोलिजे॥२॥मयाविम्वरउनवर्णाव्या
पहशिकेश॥प्रकाशनराय
पा॥सूर्यपण॥३॥सूर्यप्रतापअ
हंकार॥तेविम्वर॥वशकर॥लयणा
वचरावर॥हस्त॥मल्लमिता॥४॥गणेश
राजगदबागोविंद॥सूर्यशिवसुपनंद
मुखीनाहिका॥हिनेदु॥जेदनामासि॥५॥
सानयाविखंडेराव॥अश्वचानावेअव
यव॥विचारितामाउपावेतिनसमानरे
या॥६॥जनिभिरंजनियेक॥जावकजाणा
विनायक॥होतासेताचासेवक॥तोसमुद्रव
देवासा॥



(१)

श्रीगजानन

वाचवीणे जो उचाखर तो चीसमजानी
चतुरा॥ निज वती साधी तीचे नर॥ ते ध
न्यधन्या॥ हातावीणे जे वाह्यः आरवंड
हुम हुमीत नाद लागला त्याचा दंड
छंद॥ राते धन्य धन्य॥ विरयावी
णे जे सावहे थरीनी जलो
य॥ जनि निरंसी लाय॥ ३॥ ते
॥ एकचेतन्य॥ ते पाकल्ये ले
सगुण॥ १॥ नाद॥ उडला वी कु
णोवतया ला॥ १॥ सीवकीरंची सुती
द्र॥ सुर्य वायु आसीचंद्र॥ २॥ देवजी
वाचा वाचकः आसा॥ मविनाय
क॥ ३॥ मन बुद्धीची मोधन्य॥ आसा
यक निरंजना॥ ४॥

(9A)

संगपाहुनी धरावा भावतु कुरु
के लखवा ठाव आपला वीजारावा
तयापली ॥५॥ येका संगे सर्व सत्ता
येक्या संगे पराधीनती ॥॥ असे जा
नता जानता तुलसांशवी ॥१॥ ये
का संगे शाल ॥॥ येक्या संगती
नधुशा ॥॥ नते आपणा
येक्या संगती ॥॥ रजनिचे कार
ण वाक्य ॥॥ गणसा नां संत
हात ॥॥ सी शरण ॥॥ के लका ही ॥॥ ॥ ॥
गहं पर ॥॥ वीनायक कुलेश्वर भानेला
तोलेक ॥॥ चपुजन के ल ॥॥ दुर्वो कु
न जाण ॥॥ रसमी पा नखाणे तो राग जा
लेवा ॥॥ नने ॥॥ लडू मो द क हा नै वे



१०२ श्रीगणेशाय नमः

घटची आवडी चेरवा ६

॥ निरंजन जो निरुपल

प्रकाश स्वयंदीपा ॥ २॥



हरबादगोदं नतीगरीसस्मर

नाचीयागोश वंचलमानस

६ गोनामदे जनकलीदेवा

गणेशगोपाळदेइगोपारीशेवा ॥ १ ॥ दा

वेंतोचीपाशधरीलाहसाचेठाईधनच

तासीलोअचरीआपल्यागाई ॥ २ ॥ गणे

शातुगोरक्षकपाशधरीयाला ॥ गाई

वेलीनासीतपाशदेईआपल्या ॥ ३ ॥

मणाधीशा नृज रीणे ज जो मखे जी
पो ॥ फीरताहे जेवीउ ने भु मंडळी सुने ॥ १ ॥
तव चरण विने सीर ठे न को माझे स
र्व प्रकारे सर्व घनो आंकी नडे तुझे ॥ २ ॥ तु
झीणे दुज पाटा नावाट त मे लज्जा ॥
माझे वीर वेल पवि गीतु ज्या ॥ ३ ॥
निरंज न प्रप जव ने का पा
पती वीणे जे न न मती च का या ॥
॥ ४ ॥ दिवस निविच रुप दा वी
हात भाग्य तो या भी न भावी ॥ ५ ॥ ने वी
गोहं परंदु न ले व डोळा रस जाणे सै र ना
तो त क का रा ॥ ओ जी औ के परंदु न दे का
न द्या पा गंध पार वि आहे आन ॥ ६ ॥
तु या मर्जे जी पा ने ते आली सु जे थिल
ते ये प ग ट प री गु स ॥ ७ ॥



Digitized by eGangotri Project, Gurukul Kangri Mandal, Unnath and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(11)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

आत्मा शमधीन अवकाश चाल
काचालक अवीनाश ॥५॥ प्रकाश
राचा प्रकाश वीनायेक जीव निजी
नरक जलु वीदायेक ॥६॥ धरणी धर
आपारक वीनायेक सी नामणी देई
नचीला मणी जन परंतु निरं
जन वीनायेक रात ॥७॥
ध्याः ॥ गुरु शाय कायान्तर मिव रित्रि
स्थित्या नावीनायेक सप्रयाग ॥८॥
कर्म कांड उपासन ता न सुक्ति ये स्थान च
रण दृढ यो लमांग ॥९॥ वाच वरण प्रेत पर्व
त धर्म रण्येत जाणा दक्षण चरण ॥१०॥ पंचानु
विदेव ते पाच स्थान पिता चे फल हे भुक्तं
नानि ॥ पाप पुरुषे गया विलुप्ये ॥ श्री



(11A)

विष्णुनामसंस्थानां ॥ १० ॥

दशदहाविअष्टदिशाविशोमाअवत
दानि ॥ १॥ पंचनिधिचतुर्दशकान्तगहग

नाथ ॥ अष्टनिधिषट्पदगगयधिसा

त्रिसरस्वतिनामिनेतिराकाहुकु

निबालि ॥ समनगमावतुदो

क ॥ १॥ किंदीगाशिद्धा

लिगस्थानिब ॥ १॥ या रामबो

गयास्तिगदय ॥ १॥ द्वादशद

दिबारालिगाच ॥ १॥ अतग्रहिचिदान

रितोहंस ॥ मध्येअवतुर्गाविम्येस्वर

किमुक्तिरदेनिवाणिमीत्रासुअजिप

गाहुजहापाणवाधोनिअनत्रकैरिपु

भिस ॥ साक्षाविनायकमनकणिहिरि

हेनिरेतोरुमकवास ॥ २ ॥

(12) श्रीगजानन
 दक्षिणामनसउत्तरदोहीहेकरपंच
 जयान॥ पंचगंगाअवस्थापांचकु
 लाधवाचस्थलपाचाहिनिये॥
 शिवस्नादोतिहस्थानयात्रासपकमि
 लययात्रांत॥ त्रिभिन्नदेवगुणसक
 लालिंगवेता॥ श्रीगजानन
 ॥४॥ ब्रह्मरं॥ वचन॥
 अर्चन॥ सिद्धलं॥ ज्याप्रति
 पुरुषदिप्रयाग॥ संगद्विपरंदा
 जपे॥ कर्ण
 नासाने॥ पद॥ कहि॥
 ध्यान॥ निमि॥ मधु॥
 रापिंगला॥ सु॥ तिहि॥ ना॥
 गगा॥ यमु॥ न॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com